मॉडल सेट-03

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

संघर्ष का अर्थ है-संकटों, बाधाओं और मुसीबतों से मुकाबला करना। मानव-जीवन में संघर्ष सभी को करना पड़ता है। यह अलग बात है कि किसी को संघर्ष अधिक करना पड़ता है और किसी को कम। जा व्यक्ति संघर्ष से मुँह मोड़ता है, वह कभी जीवन में सफल नहीं हो पाता क्योंकि संघर्ष ही सफलता का पर्याय है। आपकी लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग मं चाहे जितनी विघ्न-बाधाएँ, कष्ट-दुःख आएँ लेकिन आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साहस के साथ टकराना ही होगा और उन पर विजय प्राप्त करनी ही होगी तभी आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। आपका जीवन तभी तक सार्थक है जब तक आप संघर्ष करते हैं। व्यक्ति को चाहे जैसी परिस्थितियाँ मिलें, काँटे चुभें, 'हारे नहीं इंसान', जीवन का यही संदेश है। एक कवि के शब्दों में 'सच हम नही सच तुम नहीं, सच ही महज संघर्ष है, संघर्ष से हटकर जीना भी कोई जीना है!'

(क) संघर्ष का अर्थ क्या है?

(ख) जो व्यक्ति संघर्ष से मुँह मोड़ता है उसका क्या होता है?

(ग) सफलता का पर्याय क्या ह?

(घ) आप लक्ष्य को प्राप्त करने में कैसे सफल होंगे?

(च) जीवन का संदेश क्या है?

(छ) इस गद्यांश का उचित शीषक दें।

ब. निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x2=8**

त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जाते हों, चाहे महापुरुषों की याद में मनाए जाते हों किसी ऐतिहासिक पौराणिक घटना-प्रसंग को स्मरण करने अथवा उससे प्ररणा लेने के लिए मनाए जाते हों चाहे फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में मनाए जाते हों। वे देश की एकता एवं अखंडता को मजबूत करते हैं। ये त्योहार जनमानस में नया उल्लास जगाते हैं। ऋतु-परिवर्तन के रूप में मनाए जाने वाले त्योहार हमें प्रकति के निकट ले जाते हैं तथा राष्ट्रीय पर्व हमारे मन में देशभक्ति एवं त्याग-बलिदान की भावना जगाते हैं। पंद्रह अगस्त आर छब्बीस जनवरी हमारे राष्ट्रीय पर्व माने जाते हैं।

(क) देश की एकता एवं अखंडता को कौन मजबूत करते ह?

(ख) त्योहार जनमानस में क्या जगाते हैं?

(ग) राष्ट्रीय पर्व मन में कैसी भावना को जगाते हैं?

(घ) हमारे राष्ट्रीय पर्व कौन-कौन-से हैं?

प्रश्न-2 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें। **10**

(अ) भ्रष्टाचार

क. भूमिका

ख. वर्तमान स्थिति

ग. भ्रष्टाचार के कारण

घ. रोकथाम के उपाय

च उपसंहार

(ब) व्यायाम के लाभ

क. भूमिका

ख. व्यायाम का महत्त्व

ग. व्यायाम से शरीर तथा मन पर नियंत्रण

घ. व्यायाम के प्रकार एवं लाभ

च उपसंहार

(स) समय की महत्ता

क. भूमिका

ख. समय रहते सचेत होना

ग. दुरुपयोग की हानि

घ. सदुपयोग का लाभ

च. उपसंहार

प्रश्न-3अपने जीवन के उद्देश्य के विषय में बड़े भाई को पत्र लिखें। 5

अथवा

विद्यालय में साइकिल-स्टैंड बनवाने हेतु शिक्षा मंत्री को आवेदन-पत्र लिखें।

प्रश्न-4संज्ञा के भेदों को उदाहरण सहित बताएँ। 5

अथवा

क्रिया एवं अव्यय को उदाहरण सहित परिभाषित करें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूति करें। 5x1= 5

क. अध्यापक का स्त्रीलिंग......................होगा।

ख. 'ट' का उच्चारण स्थान..................होगा।

ग. 'अभियान' में..............उपसर्ग है।

घ. 'अंधेरा छाना' मुहावरा का अर्थ..................होगा।

च 'अग्रज' का विलोम पद.........................होगा।

प्रश्न-6निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें: 5x1= 5

क. विद्या विनय देता है।

ख. वह सभी पुस्तक पढ़ डाला।

ग. मैं किताब पढ़ा हूँ।

घ. प्राण निकल गया।

च उसने पुस्तक पढ़ रहा था।

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ ब का सही मिलान आमने-सामने लिखकर करें।

6x1= 6

	स्तम्भ (अ)		**स्तम्भ (ब)**
1.	महात्मा गाँधी	क.	अक्षर ज्ञान
2.	यतीन्द्र मिश्र	ख.	लौटकर आऊँगा फिर
3.	विनोद कुमार शुक्ल	ग.	मेरे बिना तुम प्रभु
4.	अनामिका	घ.	शिक्षा और संस्कृति
5.	जीवनानंद दास	च.	नौबत खाने में इबादत
6.	रेनर मारिया रिल्के	छ.	मच्छली

निर्देश-प्रश्न 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 मनुष्य बार-बार नाखनों को क्यों काटता है? 3

प्रश्न-9 'नंदिनागरी' किसे कहते हैं? किस प्रसंग में लेखक ने उसका उल्लेख किया है? 3

प्रश्न-10 बहादुर रात को कहाँ सोता था? 3

प्रश्न-11 नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहले बिरजू महाराज किस संस्था से जुड़े और वहाँ किसके सम्पर्क में आए? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें।

जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाय तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपने पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके।

क. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? 1

ख. इस पाठ के लेखक का नाम क्या है? 1

ग. इस गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें 3

प्रश्न-13 कवि के अनुसार भारत माता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई हं? **3**

प्रश्न-14 छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हं? स्पष्ट करें। **3**

प्रश्न-15 मक्खी के जीवनचक्र का कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का क्या आशय है? **3**

प्रश्न-16 कवि अगले जन्म में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है और क्यों? **3**

प्रश्न-17 निम्नांकित पद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें:

मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोग?

क. प्रस्तुत पद्यांश किस पाठ से लिया गया है? 1

ख. इस पाठ के रचनाकार कौन हं? 1

ग. इस पद्यांश का भाव अपने शब्दों में व्यक्त करें। 3

प्रश्न-18 मेट्रन ने माँ को कैसा आश्वासन दिया? 3

प्रश्न-19 बल्लि अम्माल ने अपनी बेटी के साथ घर लौटने का निर्णय क्यों लिया? 3

प्रश्न-20 रंगप्पा कौन था वह मंगम्मा से क्या चाहता था? 4

उत्तर मॉडल सेट-03

उत्तर-1(अ)

क. संघर्ष का अर्थ है-संकटों ,बाधाओं और मुसीबतों से मुकाबला करना।

ख. वह कभी जीवन में सफल नहीं हो पाता।

ग. संघर्ष

घ. लक्ष्य-प्राप्ति के लिए विघ्न-बाधाओं से साहस के साथ टकराना ही होगा, उन पर विजय प्राप्त कर ही लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे।

च. व्यक्ति को चाहे जैसी परिस्थितियाँ मिलें, काँटे चुभें, हारे नहीं इंसान, जीवन का यही संदेश है।

छ. संदर्भ

उत्तर-1(ब)

क. त्योहार।

ख. नया उल्लास।

ग. देश-भक्ति एवं त्याग-बलिदान की भावना का जगाते हैं।

घ. 15 अगस्त एवं 26 जनवरी।

उत्तर-2

(अ) - भ्रष्टाचार

क. मानव का अपने आचार-व्यवहार से भ्रष्ट (गिर जाना) हो जाना ही भ्रष्टाचार है और ऐसा आचरण करने वाला भ्रष्टाचारी है। रिश्वत लेना, भाई-भतीजावाद, मिलावट, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी, जमाखोरी, कर्तव्य-पालन में विमुखता, सरकारी पद एवं साधन का दुरुपयोग,आयकर चोरी, सादों में कमीशनखोरी आदि सभी कुछ तो भ्रष्टाचार हं।

ख. भारत में आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है जहाँ ईमानदारी से कार्य होता हो। यहाँ के लोग जन्म से मृत्यु तक कितने बार न जाने कहाँ-कहाँ (अस्पताल, विद्यालय, कार्यालय इत्यादि में) इसका शिकार बनते हैं।

ग. भ्रष्टाचार के ऐसे विकराल रूप धारण करने का सबसे बड़ा कारण इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति का धन-प्राप्ति में लगा होना है। मनुष्य अपनी असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनचाहे उपायों को अपना रहा है। हमारा नेतृत्व करने वाले

भी अपने उद्देश्य एवं जिम्मेदारियों को भूल गये हैं। इसी के परिणामस्वरूप यह ऊपर-नीचे सभी जगह व्याप्त हो गया है।

घ. हमें समाज में इस समस्या का समाधान करने के लिए सबसे पहले आवश्यक यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। शिक्षा में नैतिकता के अंश को हर स्तर पर जोड़ना होगा जिससे की हमारी नई पीढ़ी में नैतिक प्रतिमानों का विकास हो। न्याय एवं दंड-व्यवस्था को दुरुस्त करना होगा जिससे कि बड़ा-से-बड़ा एवं छोटा-से-छोटा व्यक्ति को समान न्याय मिल सके। समाज में ईमानदार व्यक्ति को सम्मान देन की एवं भ्रष्टाचारियों को दंडित करने की व्यवस्था भी हो।

च. इस प्रकार आज दिनांदिन जिस प्रकार भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है उसे अगर कठोरता से नहीं रोका गया तो निश्चय ही यह महामारी का रूप ले लेगा। हमें ऐसी व्यवस्था विकसित करनी होगी जिससे न केवल भ्रष्टाचार से मुक्ति मिले अपितु इसका नामोनिशान ही मिट जाये तभी हम 'रामराज्य' की कल्पना कर सकते हैं।

(ब)व्यायाम के लाभ

(क) लोक में उक्ति प्रचलित है-'पहला सुख निरोगी काया'। स्वस्थ शरीर मानव के लिए अत्यावश्यक है जो बिना व्यायाम के नहीं हो सकता। आज की भागदौड़ से भड़ी जिन्दगी ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया है कि वह यह भी भूल गया है कि जो व्यक्ति अपने शरीर की उपेक्षा करता है, समझ लीजिए वह अपने लिए रोग, बुढापा और मृत्यु के दरवाजे खोलता है।

(ख) हमारे लिए भोजन, पानी एवं हवा की तरह व्यायाम भी अत्यावश्यक ह। इससे मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। रक्त-प्रवाह तेज होता है, पाचन-शक्ति बढ़ती है अस्थियाँ मजबूत होती ह शरीर का अनावश्यक पदार्थ पसीना बनकर बाहर निकल जाता है, त्वचा स्वस्थ बनती है, भूख बढ़ती है तथा शरीर सुडौल ओर सुगठित बन जाता है।

(ग) नियमित व्यायाम करने वाले व्यक्ति में एक ऐसी अद्‌भुत शक्ति आ जाती है कि सारा शरीर स्फूर्त हो जाता है। इसी के फलस्वरूप वह व्यक्ति अपने मन की भावनाओं पर भी नियंत्रण रख सकता है। यदि शरीर स्वस्थ रहेगा तो मन भी प्रसन्न रहेगा और हम हर काम आनंद एवं स्फूतिं से कर सकेंगे।

(घ) व्यायाम के अंतर्गत अनेक प्रकार के क्रियाकलाप शामिल होते हैं। सबसे प्रमुख कार्य है प्रात: काल जल्दी उठकर घूमने जाना। प्रात: घूमने से एक ओर तो हमारे प्राणों में स्वच्छ वायु का संचार होता है, दूसरी ओर शरीर के सभी स्नायुओं में रक्त-संचार

होता है। इसके अलावा लोग तरह-तरह की कसरतें भी कर सकते हैं। खेल भी व्यायाम के ही अंतर्गत आता है। खेलों से न केवल व्यायाम होता है अपितु यह मनोरंजन का भी सशक्त साधन है। नगरों एवं महानगरों में जिम भी खुल गये है। जिनके पास समय का अभाव होता है। उनके लिए यह बहुत उपयोगी होता है।

(च) इस प्रकार नियमित व्यायाम अच्छे स्वास्थ्य के लिए उपयोगी औषधि है। मनुष्य मात्र को इसके लिए कुछ समय निश्चय निकाल लेना चाहिए। क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।

(स)समय का महत्त्व

(क) प्राणिमात्र को इस संसार में आना एक निश्चित समयावधि के लिए ही होता ह। क्षणों से निर्मित यह हमारा जीवन क्षण-प्रतिक्षण बीतता जाता है और जीवन-लीला भी समाप्त हो जाती है। अतः हमारे लिए एक-एक पल महत्त्वपूर्ण है। हम इन पलों का सदुपयोग करते हुए जीवन का सफल एवं सार्थक बना सकते ह।

(ख) जो समय का मूल्य नहीं आँकता एवं व्यर्थ ही नष्ट करता है वह जीवन में न कुछ बन पाता है और न ही कुछ कर पाता है। खोया धन पुनः अर्जित हो सकता है, खोई प्रतिष्ठा पुनः मिल सकती है, बिगड़ा स्वास्थ्य उपचार से सुधर-सँवर सकता है, पर गया वक्त फिर हाथ नहीं आता है। अतः समय को पहचानने वाला सफलता के सोपानों पर चढ़ते हुए ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।

(ग) समय के सदुपयोग का अर्थ है-उचित अवसर पर उचित कार्य पूरा कर लेना। जो व्यक्ति, समाज, समुदाय, राष्ट्र, समय का सम्मान करना जानते हैं वे शीर्षस्थ होते ह। वे अपनी-अपनी शक्ति को कई गुणा बढ़ा लेते हैं। जीवन का एक-एक क्षण उपयोगी है। उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए अपने जीवन-लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। जीवन तो क्षणभंगुर है। हो सकता है, वह अगले क्षण ही धोखा दे जाए। इतिहास गवाह है जो समाज, राष्ट्र, समय का सम्मान किया उसका आज भी है, जिसने तिरस्कार किया वे विलुप्त हो गये।

(घ) जो समय का मूल्य नहीं आँकता तथा उसे व्यर्थ नष्ट करता है, वह जीवन में कुछ नहीं बन पाता है। नीतिकारों का कहना है कि समय पर काम नहीं करने वाला स्वयं नाश को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति आलस्य के वशीभूत होकर समय पर कार्य नहीं करते, समय उन्हें नष्ट कर देता है।

(च)   अतः मानवमात्र को समय की आगवानी करनी चाहिए न कि उसकी उपेक्षा। जिसे उसका सदुपयोग करना है उसे तैयार होकर उसके आने की अग्रिम प्रतीक्षा करनी चाहिए। जो समय क निकल जाने पर उसके पीछे दौड़ते हैं, वे जिन्दगी में सदा पिछड़ते रहते हैं।

उत्तर-3 परमादरणीय भैया, पटना

सादर प्रणाम। दिनांक 13-12-2016

मैं कुशल हूँ, आशा है कि आप भी कुशल होंगे। मैं इस बार मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित हो रहा हूँ। इसको उत्तीण करने के बाद मैं महाविद्यालय में हिन्दी का प्राध्यापक बनना चाहता हूँ। मेरी जिन्दगी का यही एकमात्र उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक समय भी लग सकता है। आपसे यही अपेक्षा है कि आप हमें उद्देश्य की प्राप्ति में मेरे मनोबल को बढ़ाते रहें। यहाँ सभी लोग ठीक हं। भाभी को चरण-स्पर्श एवं गोलू, भोलू को मेरा आर्शीवाद।

आपका प्रिय अनुज
प्रभाकर
कक्षा-10 (ब)

पता

उत्तर-3 अथवा

सेवामें,

माननीय शिक्षामंत्री
बिहार सरकार,पटना।

विषयः-   विद्यालय में साइकिल-स्टैंड बनवाने के संबंध में।

महाशय,

निवेदन है कि मैं पभाकर कुमार, उ0 वि0 रायपुर में कक्षा-10 का छात्र हूँ। मेरे विद्यालय में छात्रों की संख्या 2000 के आसपास है। साइकिल-स्टैंड नहीं होने के कारण छात्र इधर-उधर साइकिल रख देते हैं। विद्यालय में छुट्टी के समय अव्यवस्था बन जाती है। साइकिल की सुरक्षा एवं रखरखाव के लिए साईकिल-स्टैंड की बड़ी जरूरत है।

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि मेरे विद्यालय में साइकिल का स्टैंड बनवाने की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा की जाए। इसके लिए सम्पूर्ण विद्यालय-परिवार आपका आभारी रहेगा।

आपका विश्वासभाजन

दिनांक -13-12-2016

प्रभाकर कुमार,

उ0 वि0, रायपुर

उत्तर-4

संज्ञा के भेद- अर्थ के आधार पर संज्ञा के मुख्यत: पाँच भेद ह।

1.	व्यक्तिवाचक	-	राम, रहीम, पद्माकर
2.	जातिवाचक	-	गाय, मनुष्य, वृक्ष
3.	समूहवाचक	-	मेला, सभा, सेना, वर्ग
4.	द्रव्यवाचक	-	सोना, घी, तेल, चावल
5.	भाववाचक	-	बचपन, मिठास, बुढापा

उत्तर-4अथवा

क्रिया- जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं- जैसे-खाना,पीना,उठना,बैठना इत्यादि।

अव्यय- अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जिनमें लिंग, वचन, पुरुष आदि के कारण कभी कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-बहुत, भारी, यहाँ, वहाँ इत्यादि।

उत्तर-05

क. अध्यापिका

ख. मूर्धा।

ग. अभि।

घ. गम से भर जाना।

च अनुज।

उत्तर-6

क. विद्या विनय देती है।

ख. उसने सभी पुस्तकें पढ़ डाली।

ग. मंने किताब पढ़ी है।

घ. प्राण निकल गये।

च. वह पुस्तक पढ़ रहा था।

उत्तर-7

1. घ
2. च
3. छ

4. क.
5. ख
6. ग

उत्तर-8 नाखून पशुता के प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार काटा जाता है वह उतनी ही बार जन्म ले लेती है। मनुष्य अपने से पशुता को निकाल कर सच्चे अर्थों में मनुष्य बना रहना चाहता है। अतः पशुता के प्रतीक नाखून जब भी बढ़त हं। तब ही मनुष्य उन्हें काट डालता है।

उत्तर-9 दक्षिण भारत की नागरी लिपि को 'नंदिनागरी' कहते है। लेखक ने नागरी लिपि के विकास के प्रसंग में उसका उल्लेख किया है।

उत्तर-10 सभी कायां को करने के बाद बहादुर भीतर के बरामदे में एक टूटी हुई बसखट पर सोता था।

उत्तर-11 नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहले बिरजू महाराज निर्मला-जोशीजी की संस्था, 'हिन्दूस्तानी डांस म्यूजिक अकाडेमी' दिल्ली से जुड़े वहाँ वे कपिलाजी, लीला कृपलानी आदि के सम्पर्क में आए।

उत्तर-12 क. श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

ख. भीवराम अम्बेदकर

ग. प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि जाति-प्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है क्योंकि इसमें मनुष्य की रुचि का महत्त्व नहीं रहता है। अतः व्यक्तियों की क्षमता तथा कार्यकुशलता को इस क्षमता तक विकसित किया जाना चाहिए जिससे अपने कार्य व पेशा का चुनाव व स्वयं कर सकें। सक्षम श्रमिक वर्ग के निर्माण के लिए यह अत्यावश्यक है।

उत्तर-13 भारत गाँवों का देश है। गाँवों का विकास ही एक प्रकार से भारत का विकास है पर गाँवों के विकास पर किसी का ध्यान नहीं ह। गाँव उपेक्षित पड़े हुए हैं। गाँवों के साथ गैरों जैसा व्यवहार किया जाता है। सारी विकास योजनाएँ नगरों के लिए बनती हैं। इसीलिए भारत माता अपने ही घर में प्रवासिनी (परायी) बनी हुई हं।

उत्तर-14 छाया प्रकाश की दिशा की विपरीत दिशा में बनती है। उगते हुए सूरज के प्रकाश में छायाएँ पश्चिम दिशा की ओर बनेंगी पर अणु बम क विस्फोट से निकल सूरज की रोशनी में मानव-जन की छायाएँ दिशाहीन स्थिति में सब ओर पड़ीं (उस विस्फोट से एक ही साथ विभिन्न दिशाओं से अनेक सूरज उत्पन्न हुए जिनकी रोशनी में मानव-जन की छायाओं को एक निश्चित दिशा में बनना संभव नहीं था।

उत्तर-15 कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का आशय यह है कि जिस प्रकार मक्खी का जीवन-क्रम लगातार चलता रहता है पैदा होता ह, पैदा करती हैं, मर जाती हैं किन्तु इसके पीछे के उद्देश्यों को नहीं जानती हैं उसी प्रकार मनुष्य भी पैदा होते हैं, पैदा करते हैं और मर जाते हैं यही क्रम चलता रहता है। पैदा होने और पैदा करने के पीछे के उद्देश्यों से मनुष्य प्राय: परिचित नहीं होत हैं। यही मनुष्यों की नींद है। जीवन इतना हठीला होता है कि वह नींद के बावजूद अपने क्रम में लगातर बढ़ता रहता है।

उत्तर-16 कवि अगले जन्म में अबाबोल, कौआ, हंस, उल्लू और सारस बनने की संभावना व्यक्त करता है क्योंकि मरने के बाद भी वह अपनी मातृभूमि बंगाल से किसी-न-किसी रूप में जुड़ा रहे। मरने के बाद मनुष्य योनि में जन्म नहीं लेता तो कोई हर्ज नहीं, यदि वह पक्षी बनकर मातृभूमि से जुडा़ रहे।

उत्तर-17 क. मेरे बिना तुम प्रभु

ख. रेनर मारिया रिल्क

ग. एक भक्त के रूप में कवि भगवान से कहता है कि मैं तुम्हार वेश में (घर, मकान) हूँ। तुम मुझमें निवास करते हो। मुझसे ही तुम्हारे अस्तित्व का बोध होता है। यदि तुमने मुझे खो दिया तो तुम अपना अर्थ खो बैठोगे। भगवान की भगवत्ता, भक्त की सत्ता पर ही निर्भर है।

उत्तर-18 मेट्रन ने माँ को आश्वासन देते हुए कहा कि आज तक आप मंगु की माँ थीं पर जब आप उसे अस्पताल में छोड़कर जा रही ह तब आज से मैं इसकी नई माँ हूँ। आप किसी बात की चिंता न करें।

उत्तर–19 बल्लि अम्माल अस्पताल के वातावरण से भयभीत हो गई थी। अस्पताल के सारे कर्मचारी संवेदनाहीन थे। कोई उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था। ऐसी स्थिति में वह अपनी बेटी का इलाज उस अस्पताल में कैसे करवाती अतः उसने अपनी बेटी के साथ घर लौट जाने का निर्णय लिया।

उत्तर–20 रंगप्पा, मंगम्मा के गाँव में हो रहता था। वह शौकीन तबियत का था। वह जुआ भी खेलता था। वह मंगम्मा से थोड़ा कर्ज चाहता था क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उसकी दृष्टि मंगम्मा के धन पर थी। वह उसके साथ नजदीकी बढ़ाकर उसके धन को पाना चाहता था। रंगप्पा जानता था कि मंगम्मा अपने बेटा से अलग हो गई है। अतः वह उसके अकेलेपन का फायदा उठाना चाहता था। वह मंगम्मा से उसका हाथ चाहता था उसके साथ घर बसाना चाहता था।